एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

आर्थिक सुरक्षा की दृष्टि से कृषि वानिकी एक नया परिपेक्ष

(डॉ. आस्था गुप्ता, डॉ. अल्का श्रीवास्तव एवं *प्रभात मिश्रा)
कृषि वानिकी विभाग, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ. प्र.) 284128
*संवादी लेखक का ईमेल पता: prabhatmishra4411@gmail.com

राष्ट्रीय कृषि आयोग 1976 के अनुमान के अनुसार 1970 मे वानिकी के अन्तरगत 2.5 लाख मानव प्रति वर्ष का रोजगार उपलब्ध था एवं वर्ष 2000 मे 65 से 70 लाख मानव प्रति वर्ष रोजगार उपलब्धता की सम्भावना रखी गयी।

देश मे वन के लिए पर्याप्त क्षेत्रफल क्या होना चाहिए एवं उसका वितरण किन किन क्षेत्रौ मे किस प्रकार होना चाहिए। इन तथ्यो का ज्ञान वानिकी विद्वानो द्वारा निर्मित की गई देश की वन नीति से होता है। हमारे देश की वन नीति के अनरूप देश का 33% क्षेत्रफल वनो से अच्छादित होना चाहिए। प्रत्येक पर्वतीय प्रदेशों मे मृदा एवं जल संरक्षण के लिए 60% भूमि एवं मैदानी प्रदेशों में 20% भूमि वन अच्छादित होनी चाहिए। आर्थिक सुरक्षा को सुनिश्चित करने में कृषि वानिकी का महत्व बढता जा रहा हैं यह नया परिप्रेक्ष्य कृषि एवं वानिकी के लिए दुर्लभ संगम को दर्शाता हैं। जिसके माध्यम से आर्थिक सुरक्षा की पहचान संभव होती है। कृषि वानिकी में वृक्षों के सदुपयोग का अवलोकन करते हुए बेहतरीन उपयोग करते हैं एवं कृषि उत्पादन बढ़ाने में तीव्रता आती है इस प्रकार कृषि वानिकी आर्थिक विकास एवं ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

कृषि एवं आर्थिक सुरक्षा के दरमियान संबंध

कृषि वानिकी कृषकों के लिए स्वर्ण बांध के समान कार्य करती है परंतु कृषक को धरणा स्वरूप प्रतीत होता है की गान्ना, धान, गेहूं ,बाजार या मक्का उत्पादन करना पक्की खेती है तथा इमारती लकड़ी के वृक्ष एवं फल व सब्जी उगना कच्ची खेती है इसी तथ्य को केंद्रित करते हुए की क्षेत्रीय फसलों के अतिरिक्त अन्य वन फसलों को उत्पादित कर एवं वन्य वृक्ष फसले क्षेत्रीय कृषि में सम्मिलित कर आर्थिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। कृषक कृषि वानिकी के अंतर्गत गन्ना- आम- लोकी , आम-अदरक, आम- हल्दी, आम - अमरूद -हल्दी जैसे फसल चक्र को अपना कर आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं इस प्रकार कृषि वानिकी के इन फसल चक्रो को अपना कर कृषक बीमा स्वरूप आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकता है वर्तमान में कृषि का सकल घरेलू उत्पाद 15 से 16% है तथा कृषि वानिकी द्वारा इसकी प्रतिशतता में वृद्धि की जा सकती है इस प्रकार कृषि वानिकी प्रणाली कृषक के आर्थिक विकास से महत्वपूर्ण संबंध रखती है। भारतवर्ष में खेती की अनेक विधियां प्रचलित है जैसे शिफ्टिंग कल्टीवेशन सिस्टम, टोंगिया सिस्टम, झूमिंग कल्टीवेशन आदि इन सभी प्रकार की खेती की तुलना में दूसरे और तरीकों से कृषि वानिकी अधिक आर्थिक लाभदायक है।

कृषि वानिकी के लाभ

विश्व का कुल क्षेत्रफल 13300 मिलियन हेक्टेयर के आसपास बताया जाता है जिसमें से भारत 329 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैला हुआ है जो की संपूर्ण विश्व का 2.4 प्रतिशत क्षेत्रफल है तथा भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार 485 मिलियन मानव जाति व 416 मिलियन पशुधन पाया जाता है जो विश्व जनसंख्या के हिसाब से 15 से 16 प्रतिशत है तथा क्षेत्रफल 2.4% है इससे ज्ञात है कि प्रतिजीव खाद्य उत्पादन क्षेत्र अत्यधिक कम है इसलिए कृषि के साथ वानिकी फसल चक्र अपनाना आर्थिक दृष्टि के अतिरिक्त मानव एवं पशु जाति की सांसारिक आवश्यकताओं के लिए भी अत्यधिक आवश्यक एवं लाभदायक है इसके अतिरिक्त कृषि वानिकी के लाभों को इस प्रकार समझ सकते हैं कि कुछ वृक्ष नाइट्रोजन का मृदा में स्थिरीकरण अधिक तीव्र गति से करते हैं तथा सूर्य के प्रकाश का संपूर्ण उपयोग कर शीघ्र वृद्धि कर कृषक को आर्थिक लाभ प्रदान करते हैं वृक्षों की पत्तियां गिरकर मृदा एवं जल के साथ क्रिया कर खाद का निर्माण कर मृदा उत्पादक क्षमता की वृद्धि करती हैं।

आर्थिक सुरक्षा में कृषि वानिकी का योगदान

कृषि वानिकी को अपनाकर प्राप्त वन्य फसलों से कृषक फर्नीचर उद्योग ,काफिन उद्योग, प्लाईवुड उद्योग, कागज उद्योग, कार्ड बोर्ड उद्योग ,प्राकृतिक रंग उद्योग, चटाई हेतु फाइबर उद्योग, टोकरी हेतु फाइबर उद्योग ,शहद उद्योग, चार उद्योग आदि का सफलतापूर्वक निर्माण कर अतिरिक्त आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं आर्थिक लाभ प्रदान करने के आधार पर ही प्राचीन विचारकों ने वन वृक्षों के लिए यह कथन दिया था।

"तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पियही न पान।

कही रहीम पर -काज -हित ,संपत्ति सच ही सुजान।।"

विशेषज्ञों की राय

"क्रियते यत्र विच्छेद: सुपुष्प फलानि नस्तरो ।

अनावृष्टि भयं घोरं तस्मिन देशे प्राजायैन।।"

श्लोक के माध्यम से आर्यावर्त संस्कृति में वनों का बहुत अधिक महत्व परिलक्षित होता है प्राचीन काल में विचारक जीव, ऋषि तथा मुनी सभी वनों में ही पोषित हुए हैं तथा वनों से ही संपूर्ण आवश्यकताएं पूर्ण की एवं अंत में वनों में ही आत्मसात् हो गए। आधुनिक युग में भी कृषि विशेषज्ञों का अनुभव यही प्रतीत कराता है कृषि एवं वनों के संबंध में चतुर्वेदी सन 1981 संगल सन 1983 वेरी नुम्वे सन 1987 ने यह अनुभव किया कि वन प्रभावित खेतों की उपज अधिक पाई गई साधारण खेतों की तुलना में।

चुनौतियां व समाधान

कृषि वानिकी की प्रमुख चुनौती कृषक की इस धारणा में अंकित है कि आज का कृषक अपनी संपूर्ण कृषि भूमि का उपयोग खाद्य फसल उत्पादन में करके अधिक अर्थ प्राप्त करना चाहता है इसी धरना के चलते अधिकांश कर्षकों ने खेत पर उपलब्ध सभी वृक्षों को काट दिया है क्योंकि वह संपूर्ण भूमि पर व्यापारिक कृषि करना चाहते हैं यद्यपि इसका प्रभाव विपरीत हुआ है क्योंकि वर्तमान कृषक भूमि का संपूर्ण उत्पादन एक ही बार में ग्रहण करना चाहते हैं तथा मृदा दशा पर ध्यान नहीं दे रहे यही कारण है कि कृषक कृषि को व्यापक रूप देने के लिए वन वृक्ष नहीं लगाना चाहते हैं वह वृक्षों को कृषि कार्य का अवरोध मानने लगे हैं आधुनिक युग में उत्पादन क्षमता में वृद्धि एवं अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त करने का एकमात्र उपाय व समाधान कृषि वानिकी प्रणाली ही है।

समाप्ति एवं निष्कर्ष

आधुनिक युग में आर्थिक व सामाजिक दोनों ही दृष्टि से कृषि वानिकी मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है क्योंकि यह प्रणाली मानव को आर्थिक लाभ के साथ-साथ वातावरणीय लाभ भी प्रदान करती है जो कि वर्तमान वातावरणीय दृष्टि से आज की सांसारिक मांग है।